Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

इंदौर और कपड़ा उद्योग का इतिहास, वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाएँ

श्रीमती ज्योतिबाला राठौर*

* प्रशिक्षण अधिकारी, राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान, इन्दौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत के औद्योगिक इतिहास में इंदौर का नाम विशेष रूप से कपड़ा उद्योग के लिए जाना जाता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर आज तक इंदौर ने न केवल मध्य भारत, बल्कि देश के वस्त्र उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाई है। यह शोध पत्र इंदौर की पहली कपड़ा मिल से लेकर प्रधानमंत्री मित्र पार्क तक की विकास यात्रा को रेखांकित करता है, जिसमें ऐतिहासिक, आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना – भारत की औद्योगिक प्रगति में कपड़ा उद्योग का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यह उद्योग न केवल आर्थिक विकास का आधार है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, रोजगार और तकनीकी प्रगति का भी प्रतीक है।

इंदौर, जो कभी मालवा क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी रहा, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से कपड़ा उद्योग का केंद्र बन गया। महाराजा तुकोजीराव द्वितीय के समय से प्रारंभ होकर यह उद्योग सर हुकुमचंद जैसे उद्योगपतियों के प्रयासों से स्वर्ण युग तक पहुँचा और आज प्रधानमंत्री मित्र पार्क जैसी आधुनिक परियोजनाओं के माध्यम से पुन: वैश्विक स्तर पर स्थापित हो रहा है।

इंदौर में कपड़ा मिलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पहली कपड़ा मिल (1866) – इंदौर में पहली कपड़ा मिल की स्थापना सन् 1866 में महाराजा तुकोजीराव द्वितीय द्वारा की गई थी।

यह राज्य की पहली कपड़ा मिल थी और इसकी मशीनें हाथियों पर लादकर इंदौर लाई गईं , जो उस युग की तकनीकी दूरदृष्टि और उत्साह का प्रतीक है।

मिल के लिए रूई का प्रबंध गुजराती व्यापारियों डायाभाई बसंती और सोजीराम सालिगराम द्वारा किया गया, जिन्होंने जीनिंग फैक्ट्री लगाई। प्रारंभ में कपड़ा मोटा बनता था, और सैनिकों को वेतन के रूप में कपड़ा दिया जाने लगा। बाद में यह मिल भंडारी परिवार को बेच दी गई।

औद्योगिक विस्तार और स्वर्ण काल (1909–1925) – 1909 में सर सेठ हुकुमचंद और सेठ जमनादास मुहारमल के प्रयासों से मालवा यूनाइटेड मिल की स्थापना मुंबई के सर करीमभाई इब्राहिम की देखरेख में हुई।

इसके बाद क्रमश:

1. फतेहपुरिया जीनिंग एंड प्रेसिंग फैक्ट्री,
2. हुकुमचंद मिल,
3. नंदलाल भंडारी मिल,
4. स्वदेशी कॉटन मिल,
5. कल्याण मिल, और
6. राजकुमार मिल

की स्थापना हुई।

1917 से 1925 तक का समय इंदौर के कपड़ा उद्योग का सुनहरा युग (Golden Era) माना जाता है। उस समय सात मिलों में 10,720 लूम्स और 4,05,805 स्पिंडल्स चालू थे।

मध्यभारत प्रांत की 15 मिलों में से 7 केवल इंदौर में थीं, जिससे इंदौर को 'मालवा का मैनचेस्टर' कहा जाने लगा।

इंदौर और कपास उत्पादन की स्थिति – कपास को भारत में 'सफेद सोना' कहा जाता है। मध्यप्रदेश देश के कुल कपास उत्पादन का लगभग 43 प्रतिशत और विश्व का लगभग 24 प्रतिशत उत्पादन करता है।

इंदौर और उसके आसपास के खरगौन, धार, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, झाबुआ, अलीराजपुर, देवास और रतलाम जिले कपास उत्पादन के प्रमुख केंद्र हैं।

उत्पादन आँकड़े :–

वर्ष	कपास उत्पादन (लाख मीट्रिक टन)
2022–23	8.78
2023–24	6.30
2024–25	5.60

वर्तमान में मध्यप्रदेश में कपास का रकबा 5.83 लाख हेक्टेयर है।

यहाँ के कपास का रेशा 30 मिमी लंबा होता है, जिससे फाइन क्वालिटी धागा तैयार किया जाता है। यूरोप और अमेरिका में मध्यप्रदेश के कपास से बने टॉवेल, चादर और वस्त्र की विशेष मांग है। राज्य से तैयार कपड़ा और गारमेंट का वार्षिक निर्यात लगभग 7,000 करोड़ है।

प्रधानमंत्री मित्र (PM MITRA) पार्क – एक औद्योगिक क्रांति की शुरुआत – प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 17 सितम्बर 2025 को अपने 75वें जन्मदिन पर इंदौर के पास धार जिले के ग्राम भैसोला में देश के पहले PM MITRA Park की आधारशिला रखी।

यह परियोजना 2158 एकड़ भूमि पर विकसित की जा रही है। इसमें 114 इकाइयों ने रू 23,146 करोड़ के निवेश की स्वीकृति दी है, जिससे लगभग 72,000 प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। यहाँ 81 Plug and Play यूनिट्स स्थापित होंगी, जिनसे फाइबर से लेकर फैब्रिक, फैशन और फॉरेन एक्सपोर्ट तक की संपूर्ण वैल्यू चेन विकसित होगी।

परियोजना की प्रमुख विशेषताएँ :-

1. 3 लाख से अधिक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार की संभावना।
2. श्रमिकों व महिला कर्मचारियों के लिए आवासीय व सामाजिक सुविधाएँ।
3. निवेशकों के लिए आधुनिक बुनियादी ढाँचा व लॉजिस्टिक सपोर्ट।
4. 27,109 करोड़ रुपये के कुल निवेश प्रस्ताव अब तक प्राप्त।
5. वस्त्र उद्योग के बड़े संगठनों की रुचि - भारत को 'Global Textile Hub' बनाने की दिशा में कदम।

औद्योगिक, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

1. आर्थिक प्रभाव- PM मित्र पार्क से न केवल स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि कपास किसानों को भी उचित मूल्य और बाजार उपलब्ध होगा। राज्य के एक्सपोर्ट वैल्यू में उल्लेखनीय वृद्धि की संभावना है।

2. सामाजिक प्रभाव - यह परियोजना महिला रोजगार, तकनीकी प्रशिक्षण और ग्रामीण विकास के नए अवसर प्रदान करेगी। स्थानीय युवाओं के लिए Skill Development केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जिससे उन्हें आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण मिलेगा।

3. पर्यावरणीय प्रभाव - परियोजना में Green Manufacturing Zero Liquid Discharge System and Waste Recycling को अपनाया जा रहा है, जिससे यह भारत का पहला सस्टेनेबल टेक्सटाइल पार्क बनेगा।

इंदौर - भविष्य का टेक्सटाइल हब - इंदौर पहले ही 'क्लीन सिटी' और 'स्मार्ट सिटी' के रूप में पहचाना जा चुका है। अब यह 'टेक्सटाइल हब' बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है।

मालवा क्षेत्र की ऐतिहासिक औद्योगिक पृष्ठभूमि, उत्कृष्ट कपास उत्पादन, प्रशिक्षित श्रमिक वर्ग और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण , ये सभी कारक इंदौर को भविष्य का वस्त्र उद्योग केंद्र बना रहे हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

चुनौतियाँ-

1. जलवायु परिवर्तन के कारण कपास उत्पादन में उतार-चढ़ाव।
2. ऊर्जा लागत में वृद्धि।
3. विदेशी प्रतिस्पर्धा।

संभावनाएँ-

1. टेक्सटाइल सेक्टर में Automation & AI Integration
2. हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट और ऑर्गेनिक टेक्सटाइल का उभरता बाजार।
3. इंदौर का भौगोलिक स्थान , मध्य भारत में लॉजिस्टिक हब के रूप में लाभकारी।

निष्कर्ष - इंदौर का कपड़ा उद्योग केवल औद्योगिक विकास का इतिहास नहीं, बल्कि यह श्रम, सृजन और नवाचार की परंपरा का प्रतीक है। 1866 की पहली कपड़ा मिल से लेकर 2025 के पीएम मित्र पार्क तक की यह यात्रा भारत की आत्मनिर्भरता और औद्योगिक आत्मविश्वास का परिचायक है। कपास किसानों से लेकर उद्योगपतियों तक, श्रमिकों से लेकर निर्यातकों तक , यह श्रृंखला भारत की Make in India और Vocal for Local नीतियों को सशक्त बना रही है। इंदौर एक बार फिर 'मालवा का मैनचेस्टर' बनकर विश्व वस्त्र मानचित्र पर अपनी नई पहचान स्थापित कर रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. मध्यप्रदेश शासन, उद्योग विभाग- PM Mitra Park Official Project Report, 2025
2. Holkar State Industrial Records, 1866-1920
3. इंदौर जिला गजेटियर, 1909-1930
4. भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय- Annual Textile Report 2024-25
5. श्रीकृष्ण भटनागर (1995): मध्यभारत की औद्योगिक परंपरा
6. गांधी, मोहनदास के. हिन्द स्वराज , स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर विचार
7. DGT & MSDE Reports, Skill India and Textile Training Initiatives, 2024
8. Economic Times (2025) : PM Mitra Park Dhar – India's First Integrated Textile Hub

****